.... आप की माँही सभी आदि गुरुओं की माँ हैं,
उन्होंने ही सभी आदि गुरुओं को शिक्षा दी,
उन्होंने ही आदिगुरुओं का सृजन किया,
और वे ही आप में से आदि गुरुओंका सृजन करती हैं।

रविवार 23·7·89 को लागो डी ब्रीस में हुई गुरु पूजा के संकलित अंश

गुरु तत्व हमारे अन्दर निहित है। कभी कभी इस तत्व का पोषण किया जा सकता है परन्तु इस पोषण को अपने अन्दर बनाये रखना पड़ेगा। जब आप किसी तत्व की बाह्य रूप से आराधना करते हैं तो आप आन्तरिक रूप से भी उसकी आराधना करते हैं।

नाभी के चारों ओर भवसागर है जो कि भ्रम का सागर है, वह गुरू तत्व नहीं हो सकता। भवसागर में कुछ छिपे हुए चक्र हैं जिनको जागृत और प्रकट करना है। इस तत्व की सीमा स्वाधिष्ठान चक्र की परिक्रमा से निर्धारित होती है। स्वाधिष्ठान चक्र आपको सृजनात्मकता देता हैं। जो व्यक्ति गुरू है उसे सृजनात्मक व्यक्ति होना पड़ता है। अगर आप सृजनात्मक व्यक्ति नहीं हैं तो आप गुरू नहीं हो सकते। यदि आप सृजनात्मकता में पीछे हैं तो आप गुरू तत्व में भी पीछे हैं क्योंकि गुरू को साधारण मनुष्योंमें से गतिशील व्यक्तित्व बनाने होते हैं। गिरे हुए मनुष्य से उसको एक नया व्यक्तित्व बनाना हैं तो इसको कैसे किया जाय? आपके पास कुंडलिनी जागृत करके लोगों की बिमारी दूर करने की शक्ति हैं, यदि इतना होने पर भी आप एक नये व्यक्तित्व का सृजन नहीं कर सकते तो आप गुरू नहीं हो सकते।

नये व्यक्तित्व को गतिशील व करुणामय होना चाहिए, आप लोगों को करुणा के द्वारा ही बदल सकते हैं, क्रोध के द्वारा कभी नहीं। आपको अपनी करुणा की शक्ति का प्रयोग करना हैं। अगर आप करुणा की आन्तरिक इच्छा नहीं महसूस करते और दिखाते हैं तो वह व्यक्ति आपकी चिन्ता नहीं करेगा। बहुत से लोगों को जागृति मिलती हैं, वे आश्रम में, पूजा में आते हैं परन्तु उनके गुरू तत्वका सृजन नहीं होता जब तक कि वे बहुतसे और दूसरे सहजयोगी न बनाएँ। गुरू की दृष्टि इस बातपर रहती हैं कि वह और अधिक सहजयोगी कैसे बनाता है।

चित्त, स्वाधिष्ठान चक्र का बल और शक्ति हैं। यदि आपका चित्त अस्थिर हैं, दूसरों की आलोचना में व्यस्त रहता हैं, तो आपका गुरूतत्व नष्ट हो जाता हैं, सहजयोग के प्रयत्न व्यर्थ हो जाते हैं। आपका, कम से कम चित्त पवित्र होना चाहिए। आपका चित्त स्वनुशासन या केंद्रित करने से विकसित नहीं होता। आप अपने बच्चों, पत्नी, और परिवार के प्रिय रिश्तेदारों पर अत्यधिक ध्यान देते हैं। जब हमारे चित्त में दूसरों के लिए करुणा और प्रेम आ जाता हैं तभी हम उनकी जागृति के लिए कार्य कर सकते हैं। सिर्फ प्रेम की प्रगाढ़ता ही आपको शुध्द चित्त प्रदान कर सकती हैं। चित्त जो कि स्वयं से जुड़ा होता है, पवित्र होता है। आध्यात्मिकता का

....2

सुझाव प्रेम हैं। आध्यात्मिकता सेम फली की तरह सूखी नहीं हैं। यदि साबुन साफ नहीं कर सकता तो वह किस काम का? यदि प्रत्येक व्यक्ति इस तरह के सूखे आध्यात्मिक आदमी के समीप आने से डरता है तो वह आदमी किस काम का हैं?

यदि सृजनात्मकता हमारा ध्येय है तो चित्त को प्रेम और करूणा से शुध्द करना चाहिए। जब आप {हृदय में} प्रेम और करूणा भर लेते हैं, तो वह आपको गतिशील बना देता है। अपने प्रेम के प्रतिबिंब को दूसरे व्यक्ति में देखने का आनन्द अनन्त हैं, जैसे कि आप अपना प्रतिबिंब दर्पण में देखते हैं। इस तरह आप {प्रेम, करूणा} दर्पण से शुद्रित अपने प्रतिबिंब के द्वारा सृजन करते हैं।

यदि आप केवल स्वयं के लिए जीते हैं तो आप कुछ भी विकसित नही हुयें हैं, आपने गुरू के प्रति अपना कर्तव्य नही निभाया हैं। यदि आप गुरू तत्व को विकसित कर लेते हैं तो आपके अन्दर बुध्दिमता पैदा हो जाती है। बुध्दिमता तब हैं, जब आप अपनी गलती को जान लेते हैं और उन्हें सुधार लेते हैं, तभी संतुलन आता है। आरम्भ में गुरू तत्व सीमित होता हैं, जैसे आप अधिक सहज योगी बनाते हैं यह क्षितिज की तरह अपनी सीमाएं बढ़ाता जाता है।

नाभी केन्द्र बिन्दु है जिसके चारों ओर सम्पूर्ण संचालन होता है। आप नाभी चक्र अपनी मां से पाते हैं, इसलिए एक गुरू में माँ के गुण अवश्य होने चाहिए। एक गुरू को अपने बच्चों से प्रेम करना चाहिए, उन्हें सुधारणा चाहिए और उनके विकास में मदद करनी चाहिए।

हम प्रेम के साथ सत्य कैसे कह सकते हैं, हमें शिष्य की भलाई देखनी है। हो सकता हैं कि वह आज सत्य को सुनना पसन्द न करे परन्तु एक दिन वह इसके लिए आपको धन्यवाद देगा। यदि शिष्य का ध्येय उत्थान नहीं है तो अच्छा होगा कि उसे अपने पास न रखें।

हम व्यर्थ की भौतिक वस्तुओं से प्रेम कर सकते है पर मनुष्य से नहीं। प्रेम के लिए प्रेम। इस प्रेम को आप दूसरों में स्थापित करिए। आपको अपने सारे ज्ञान को प्रेम के साथ ऊपर उठाना है नहीं तो आपका गुरू तत्व कमजोर रह जाएगा और एक दिन आप स्वयं को सहज योग दायरे से बाहर पायेंगे। पहले आप अपने गुरू तत्व को विकसित करने की कोशिश कीजिए, नहीं तो गुरू पूजा करने का कोई लाभ नहीं हैं। आज, जब आप मेरी गुरू के रूप में पूजा कर रहे हैं, कितने ही आशीर्वाद क्यों न हों वे तब तक कार्यान्वित नहीं हो सकते जब तक

कि आप गुरु तत्व को गहराई तक विकसित न करें। देवदूत या देवता बनना सरल है परन्तु उसे बनाये रखता बहुत कठिन है।

मेरी इच्छा है कि मेरे सभी बच्चे मेरे प्रतिबिंब स्वरूप बन जायें और मेरे प्रतिबिंब में एकीकरण का अनुभव करें।

गोष्टी, 22-7-89 को लागो डी ग्रीस,
आल्प माउन्टेन्स, इटली में

विषय - "सहज योग को किस तरह से प्रस्तुत करें"

सहज योग के वे सुनहरे वर्ष, जिनका कि वादा किया गया था, अब आ गये हैं। सहज योग का प्रसार तेजी से हो रहा है और सम्पूर्ण संसार में नये केन्द्र खुले रहे हैं। हिम से ढकी पर्वत चूंखला से घिरी हुई सबसे सुन्दर झील के पास हजारों सहज योगी गुरुओं की मां की आराधना के लिए एकत्र हुए।

हम सभी को टर्की से अकबर द्वारा लाये गये शुभ समाचार को सुन कर बहुत प्रसन्नता हुई। ग्रीस के सहज योगियों ने हमें बताया कि उन्होंने श्री माताजी के कार्यक्रम की सफलता के लिए किस प्रकार श्री गणेश की प्रार्थना की। 1500 साधक आये, प्रेस, रेडिओ और टेलीवीजन ने समाचार दिये। शायद आप प्रेस पर समुचित ध्यान नहीं दे रहें हैं। सहज योग, स्थूल से सूक्ष्म तक, जीवन के सभी पहलुओं का वर्णन करता है। हमें इसे प्रस्तुत करने के विभिन्न तरीकों के बारे में सोचना है। पुराने सहजयोगियों का यह कर्तव्य है कि वे नये लोगों के लिये सहज योग को सरल बतायें। बहुत से देशों में यह लगभग सात दिन की अवधि के एक पाठ्यक्रम के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। नये आने वालों को इससे अधिक जानकारी मिलती है, वे अच्छी तरह से सीखते हैं और वे इस तरीके को पसन्द करते हैं।

आस्ट्रिया के सहजयोगियों ने एक विशेष प्रश्नसूची तैयार की जिसमें उन्होंने नये लोगों से पूछा कि उन्हें कौन सी चीज ने सबसे अधिक प्रभावित किया और कौन सी चीज ने तकलीफ दी। उन्होंने पुराने सहजयोगियों के करुणामय व्यवहार की प्रसंशा की और जहाँ उच्छृंखलता थी उसे भी पेश किया। कुछ पुराने सहजयोगी अपने ज्ञान को दिखाना चाह रहे थे और अपने सहज योग में बीते वर्षों की संख्या की डींग हांक रहे थे। हमें नये लोगोंके हृदय से बात करनी चाहिये दिमाग से नहीं। उनके दिमाग से बात करने में हम

....4

केवल उनके अहंकार में प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं। आस्ट्रीया के सहजयोगियों ने एक सुन्दर संगीत की टेप सुनाई जिसने सबके हृदय को छू लिया और उसके शब्दोंने अपना संदेश सबको पहुँचा दिया।

सार्वजनिक कार्यक्रम की सफलता सामूहिकता का ठोस परीक्षण है, इस संक्षिप्त नोट के साथ गोष्ठी का समापन हुआ। यदि सामुहिकता काफी प्रभावशाली है तो साधक उनके उदाहरण से आकर्षित होंगे। इसलिए प्रत्येक सहजयोगी की इच्छा और प्रयत्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। एक अच्छे साधन होने के साथ ही हमें यह याद रखना चाहिए कि श्री माताजी ही सब कुछ करती हैं।

अब्राहम

अब्रहैम नैतिक गुण या सदाचार, सत्यनिष्ठा, नम्रता और पूर्ण समर्पण के प्रतीक है। चलते राहीका स्वागत वे अपने तंबूसे निकलकर करते थे और जोर डाल कर राही को अपने तंबूमें बुलाते थे और इसको अपना सौभाग्य समझते थे। अत्यन्त कृतार्थ होकर वे पैगंबर अतिथि सत्कार करते थे और अतिथि को स्वर्गसे टपके रत्नोंका स्थान देते थे।

"मेरे प्रभू, अगर आप मुझसे प्रसन्न हैं, तो अपने दाससे मिले बिना यहाँ से ना जाँए। थोडा जल लाकेदे चरण धोकेदे, वृक्ष की छायामें विश्राम करे तब तक मैं कुछ खाने को ले आउँ, ताकि आपको नवीन शक्ति प्राप्त हो। तब आप प्रस्थान करें - क्योंकि आप अपने दास के पास आए हैं।

कनफ्युशियस

उनके व्यक्तित्व की तरह, उनके उपदेश स्वाभाविक मानवी और सरल हैं। जिससे कि लोगों को आसानी से समझ आ सके, उन्होंने अपनी बात समझाने के लिए अपने जीवन में उनका प्रयोग किया। उन्होंने कहा कि जीवन पाँच सम्बन्धों मे बँटा हैं जो निम्न हैं।

....5

1§ राजा और मन्त्री

2§ पति और पत्नी

3§ पिता और पुत्र

4§ भाई और भाई

5§ मित्र और मित्र

इन सम्बन्धों को माननीय और नैतिक प्रकार से मानना और निभाना ही स्वर्ग की इच्छा है। उन्होंने आध्यात्मिक और संसारिक मनुष्य में अन्तर ऐसे बताया,

"वरिष्ठ मनुष्य सही बात को समझता है और निम्न मनुष्य केवल लाभदायक बात ही समझता है।" उन जैसे ज्ञानी का विचार था कि पाँच नैतिक गुणों का पालन करना चाहिए, परोपकारिता, सत्यनिष्ठा, उपयुक्तता, विवेक और ईमानदारी।

राजा जनक और दूध का कटोरा

श्री माताजी ने राजा जनक के बारे में एक बड़ी सुन्दर कथा सुनाई :-

"आप जानते हैं कि राजा जनक को "विदेह" कहा जाता था। एक बार महान पंडित नारद ने उनसे पूछा, "आदरणीय महाराज, आपको विदेह कैसे कहा जाता है, आप इस संसार में रहते हैं तो आप विदेह कैसे हो सकते हैं?"

राजा जनक ने कहा, "यह बड़ी सीधीसी बात है। मैं आपको इसके विषय में शाम को बताऊँगा। अब आप मेरे लिए कृपया यह छोटा सा कार्य कर दीजिए। इस कटोरे में दूध है। आप यह कटोरा लेकर मेरे साथ साथ चलिए। इस बात का ध्यान रहे कि एक बूँद भी दूध धरती पर ना गिरे। तब ही मैं आपको बताऊँगा कि मुझे विदेह क्यों कहा जाता है"।

नारद जी कटोरा लेकर जनक के पिछे चलने लगे और हर जगह उनके साथ साथ रहते। उन्हें कटोरा बड़े ही ध्यानसे पकड़ना पड़ रहा था क्योंकि कटोरा दुध से लबालब भरा था और जरासे हिलाने से दूध छलक जाता। वे काफी थक गए। तब शाम को आराम के समय नारद जी ने पूछा

"कृपया अब मुझे बताइए। मैं कटोरा लेकर आप के पीछे चलते तंग आ गया राजा जनक ने कहा कि पहले बताइये कि आपने क्या देखा? नारद ने कहा इस दूध के कटोरे के अलावा कुछ भी नहीं। राजा जनक ने कहा, "क्या आपने मेरे सम्मान में निकाला गया जुलूस देखा? फिर आपने देखा क्या कि एक दरबार था और उसमें नृत्य का कार्यक्रम था? क्या आपने कुछ भी नही देखा?

नारद : "नहीं महाराज, मैंने कुछ नहीं देखा."
राजा जनक : "मेरे बच्चे, ऐसा ही मेरे साथ है मैं भी कुछ नहीं देखता। पूर्ण समय मैं केवल अपने चित्त पर ध्यान रखता हूँ। वो फिर जा रहा है? इस बात का अवश्य ध्यान रखता हूँ कि दूध की तरह छलक ना जाए।"

चित्त-निरोध को समझाते हुए, श्री माताजी ने कहा,"इस प्रकार का चित्त तब ही विकसित होता है जब अपने चित्त पर ध्यान रखे। चित्त-निरोध का अर्थ है चित्त की बचत। आपका ध्यान धन जमा करने में और संसारिक वस्तुओं में नही, पर अपने ध्यान को ही बचाने में लगाना चाहिए। जैसे आप अपना धन देखते हैं, गाडी चलाते समय सड़क पर ध्यान रखते हैं, जैसे अपने बच्चे को बढ़ता हुआ देखते हैं, जैसे पत्नी की सुन्दरता देखते हैं या पति की देखभाल करते हैं - सब मिलाकर अपने आप को देखिए, अपने ध्यान को देखिए"।

श्री माताजी ने जोर डाला कि सहज योग में लगन और ईमानदारी का महत्त्व है और दिलसे और प्रेम से संगीत होना चाहिए और संलग्नता से प्रार्थना। इसी प्रकार कनफ्यूशियस कहते हैं, "इमानदारी और लगनता से आत्म पूर्णता पूर्ण होती है। जिसके पास लगनता और ईमानदारी हो, वह केवल अपने को ही पूर्ण नहीं करता, पर इस गुण से अन्य मनुष्यों को भी पूर्ण करता है।"

इस उध्दरण की महत्ता सहज योग में आकर बढ़ जाती हैं। एक लगन पूर्ण और खुला हृदय कुंडलिनी की सुसुमना नाड़ी मार्ग से उठने में बहुत सहायक होता है।

....7

A·D·V·E·N·T O·F T·H·E M·A·S·T·E·R·S

गुरुओं का आगमन

· Janaka 10 000 - 16 000 B C India.

जनक भारत

· Abraham 2 000 B C Mesopotamia.

अब्राहम् मेसोपटामिया

· Moses 1 300 B C Egypt.

मोजेज मिस्र

· Zarathustra 1 000 B C Persia.

जराथुष्ठा परसिया

· Lao Tze 604 B C China.

लाओ जे चीन

· Confucius 551 B C China.

कनफ्यूशियस चीन

· Socrates 469 B C Greece.

सॉक्रेटीज ग्रीस

· Muhammad 570 A D Mecca.

मुहम्मद मक्का

· Nanaka 1469 A D India.

नानक भारत

Sai Nath 1856 A D India.

सांईनाथ भारत

सौक्रेटीज

सौक्रेटीज ने अपने शिष्यों को सत्यका मार्गदर्शन कराया। इसके लिए उन्होंने विचारो के अनेक पहलुओं पर ध्यान दिया जबतक कि सत्य स्थापित नहीं हो गया।

वे हमारे सामने आकारा का सिध्दान्त लाए - "जैसे उपर, वैसे नीचे"। जो आकार का अनदेखा क्षेत्र है वह ईश्वरीय और दैविक है और विराट की स्वर्गिक परतों पर सांसारिक प्रतिरूप हैं। जिन चीजों का सांसारिक सतह पर अस्तित्व है वे केवल अपूर्ण प्रतिबिम्ब हैं और मानव की अपूर्णता और दोषों के असर में होने के कारण कभी भी बदल सकती हैं। परन्तु जिसका निरपेक्षता और संपूर्णता में अस्तित्व है वह दैविक, निर्दोष, उत्तम, अनन्त और कभी ना बदलने वाली है। आत्मा आकार के क्षेत्र से उत्पन्न होती है और खोज और आकांक्षा से होकर वहाँ लौट जाती है। हम सहज योग में इस आत्मिक और क्रमिक विकास की ओर कार्य कर रहे हैं। अपनी चैतन्य लहरियों को शुध्द कर के हम ईश्वर के अधिराज्य में प्रवेश करते हैं।

"आगे आने वाले संसार में जो बिना दीक्षा - संस्कार ज्ञानवर्धन और आलोकित हुए प्रवेश करेगा, वह मुसीबत में फँसेगा परन्तु जो शुध्द होकर और आलोकित हो कर पहुँचेगा, उसका वास देवों में होगा"।

नानक

जैसे ही वे दस वर्ष के हुए, उनकी माँ ने सोचा कि उनका जनेऊ हो जाना चाहिए। जैसे ही नानक को जनेऊ का धागा पहनाया जा रहा था, वे बोले, "रुकिए जनाब, मैं ये धागा क्यों पहनूँ? क्या ये मुझे भला और दयालु बना देगा?"

"मुझे पूरा विश्वास नही हैं।"

"तब मुझे इसकी आवश्यकता नही है, इसकी जगह मुझे दया और सन्तोष का धागा दीजिए।"
"एक पेड़ की पहचान उसके फलों से होती है और एक आदमी/धर्म उसके कर्मों से पहचाना

जाता है। जो कपड़े, प्रतीक, आकार, संस्कार, धार्मिक कृत्य और धार्मिक अनुष्ठान, सत्यनिष्ठ कर्मों की ओर नही जाते, वे इन्सान को आत्मिक उन्नति नही दे सकते। असली कार्य ये है कि हमे अपने दिमाग से दुष्ट प्रवृत्ति को दूर करना है। अगर हम वो नही कर सकते तो हमारी सारी तपस्याएँ बेकार हैं।"

"ये शरीर एक राजमहल है और भगवान का घर है। इसमें ईश्वर ने अपरिमित ज्वाला रख दी है" - गुरु नानक

सौंदर्य

"मेरे मालिक ने मुझसे कहा कि जो माँगे उसे उदारता से दो। कोई विवेक से नही माँगता। मेरा भन्डार खुला है। कोई भी गाडी लेकर नहीं आता कि बहुमूल्य धन मुझसे ले जाए। मैं कहता हूँ खोदो और खोजो, पर कोई भी इतनी तकलीफ नहीं उठाना चाहता। अपनी परमपूज्य माँ के सच्चे बेटे बनो और पूर्णतः अपने आप को भर लो। हमारा क्या होना है? यह शरीर इस पृथ्वी को लौट जाएगा और जिस हवा में हम श्वास लेते हैं वो हवा में पिघल जाएगी। यह अवसर फिर नही वापस आएगा।"

दत्तात्रेय की सृष्टि

एक बार नारद मुनी देवी सरस्वती, लक्ष्मी और पार्वती के पास गए। उन्होंने उनसे कहा कि अत्रि की पत्नी अनुसुया सारे संसार में सबसे सच्चरित्र और गुणवान स्त्री हैं। देवियों ने अपने अपने पति ब्रह्मा, विष्णु और शिव को, अनुसुया की धर्मपरायणता की परीक्षा लेने के लिए भेजा।

अनुसुया ने अपने पति के पैर धोए और उसी जल से, ब्रह्मा, विष्णु और महेश, जो ब्राह्मण का भेष धारे हुए थे, उन पर छिडकाव किया। वे तीनों बालक में बदल गए। तीनों देवों की शक्ति छिन गई थी कि वे अपने असली रूप में लौट सकें, और तीनों उसके आश्रम में फँस गए।

सरस्वती, लक्ष्मी और पार्वती अपने पतियों को खोजने आई। तब अनुसुया ने कहा कि क्योंकि

....10

उसने इन बालकों का पालन इतने दिन किया है तो उन पर उसका भी कुछ हक बनता है। देवों ने बात मान ली और कहा की अगर वे उनको छोड़ देगी तो वो एक ऐसे बालक की सृष्टि करेंगे जिसके तीन सिर और छः भुजाएँ हों।

इस तीन सिर वाले दैविक रूप का नाम दत्तात्रेय पड़ा। बीच का सर विष्णु का प्रतीक है, दायाँ सर शिव का और तीसरा सर ब्रह्मा का प्रतीक है। जो कुत्ते दत्तात्रेय के साथ दिखाए जाते हैं वे उन परम भक्तों के प्रतीक हैं जो सदा अपने मालिक के वफ़ादार रहते हैं।

आदि गुरु दत्तात्रेय

आदिगुरु दत्तात्रेय सैध्दान्तिक और आदर्श गुरु हैं। वे आदि-प्रतीक हैं और मौलिक प्रतिमान हैं जिसमें से सब गुरु प्रकट हुए हैं। वे गुरु तत्व हैं। आदिगुरु होने के कारण, उन्होंने मानव को रास्ता दिखाने के लिए, कई बार अवतार लिए। वे दस गुरुओं के रूप में आए। जनक से साँई नाथ तक, इस महान् आदर्श ने केवल इसलिए अवतार लिया, कि ये मानव के लिए ईश्वरके प्रेम को रूप दे सकें। बार-बार ये इसलिए लौटे कि हमारी गलतियों को सही कर सकें और हमें ऐसे जीवन में वापस ले आएँ जहाँ ईश्वर ही केन्द्र हों।

श्री दत्तात्रेय ने बार बार अवतरित होकर और खूब मेहनत करके मनुष्य का मार्गदर्शन किया, इस बात से हमें यह पता लगता है की वे एक सच्चे गुरु हैं और उनका प्यार और धैर्य भी छलकता है। गुरु दत्तात्रेय ही मानवता को भवसागरके पार ले जाते हैं। वे हमें भ्रम के विश्वासघाती समुद्रों से सुरक्षा के छोर तक लाते हैं, जहाँ श्री माताजी, श्री दुर्गा की तरह, बाँहे पसार हमारी प्रतीक्षा करती हैं। श्री दत्तात्रेय का केवल एक ही कार्य था - हमारे धर्म को स्थापित करना ताकि हम विकसित हो सकें। उनकी हर अभिव्यक्ति को बस यही करना था।

श्री दत्तात्रेय स्वंय, श्री ब्रह्मदेव, श्री विष्णु और श्री शिव के तत्व और उन सबकी सरलता और निर्दोषता हैं। उनमें तीनों गुणों का एकीकरण है और सबसे बड़ी बात तो ये है कि वे स्वयं पवित्रता, निर्दोषता और अबोधता हैं। बार बार हमें याद आता है श्री माताजी का इस बात पर जोर डालना कि गुरु का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है - श्री गणेश। गुरु के विवेक से जन्म लेती है निर्दोषता या अबोधता।

अपने प्रत्यक्ष रूपों में जैसे, कनफयूशियस, जरायुष्ट्र, लाओ जे, नानक मोजेज, एब्राहेम एवम् मुहम्मद, श्री दत्तात्रेय ने कई धर्मों की स्थापना की और मानव धर्म को सुरक्षित रखा।

"आदि गुरू दत्तात्रेय ने तमसा नदी के तट पर माँ को पूजा। तमसा नदी ही आपकी थेम्स नदी है। वे स्वयं यहाँ आए और पूजन किया - शिव या आत्माके इस महान देश में।"

"दत्तात्रेय ने स्वयं ये कभी नहीं कहा कि "वे" मौलिक गुरू के अवतार हैं और तीनों शक्तियों के साथ, जो सरलता और निर्दोषता के द्वारा कार्य करती हैं, इस धरती पर मार्गदर्शन कराने आए है।"

श्री माताजी निर्मला देवी।

मुहम्मद

श्री मुहम्मद ने विस्तृत रूप में ईश्वरीय निर्णय के दिन की बात की, और कहा कि जो लोग कोरान के बताए सत्यनिष्ठा के मार्ग पर चलेंगे उन्हें अवश्य स्वर्ग प्राप्त होगा और जो ईश्वर और उसके दूतों से मुँह फेरेंगे, उन्हे नरक में जाना पड़ेगा।

सुरा 24 में ईश्वरीय निर्णय के दिन के विषय में बात करते हुए श्री मुहम्मद ने कहा,

24 उस दिन जब उनकी जबान, उनके हाथ और पैर उनके खिलाफ उनके कर्मों के हिसाब से गवाही देंगे।

25 उस दिन ईश्वर उन्हें वो सब अदा कर देंगे जिसके वे हक्दार हैं और तब वे समझेंगे कि ईश्वर सत्य है और सब वस्तुओं को वे ही प्रत्यक्ष करते हैं।

सुरा 36 में :

"65 उस दिन उनके मुँह बन्द कर दिए जाएँगे और उनके हाथ हमसे बोलेंगे, और उनके पैर उनके कर्मों की गवाही देंगे।

सुरा 7 से :

"57 वो ही है जो हवा को भेजते हैं, जो एक दूत बनकर उसकी दया का समाचार हमें उसकी

दया से पहले दे देती है। जब उन्होंने भारी बादलों को उठा लिया हैं, हम उन्हें मरे हुए देश में ले जाते हैं, वहाँ उनपर वर्षा होती है और हर प्रकार की उपज उत्पन्न होती है। इस प्रकार हम मृतकों को उठारेंगेः शायद तुम्हे याद है।"

58 "उस धरती से जो साफ और अच्छी है, उसके पालनहार की इच्छा से, खुब पैदावर उत्पन होती हैः परन्तु जो धरती खराब है, वहाँ से कुछ उत्पन्न नही होता। इसी प्रकार हम अलग अलग प्रतीकों से उनको समझाते हैं जो आभारी होते है।"

मोजेज

इनमें दस मूल नैतिक धर्म हैं मानव जाति के लिए। श्री माताजी कहती हैं कि जैसे कार्बन की चार वेलेन्सी होती है, जैसे सोना कभी काला नहीं पडता, वैसे आदमी की दस वेलेन्सी होती हैं। ये दस निर्वाह के बिन्दू हैं जो नाभी चक्र की दस पंखड़ियों का चित्रण करते हैं। इनके कारण हीं अपने उत्थान लिए हम पवित्र आध्यातिकता स्थापित कर पाते हैं। मनुष्य और कार्बन की वेलेन्सी में महत्वपूर्ण अन्तर ये है कि मनुष्य अपनी वेलेन्सी स्वतंत्रता से चुन सकता हैं, जब कि प्रकृति के नियम के अनुसार कार्बन की वेलेन्सी बैधी हुई हैं।

सिनाई पर्वत पर परमात्मा ने मोजेज को यह नियम सुनाए :

मैं तुम्हारा परमपिता परमेश्वर हूँ.....
मेरे सामने तुम्हारा और कोई परमात्मा नहीं है.....
तुम बेकार में अपने ईश्वर का नाम लोगे.....
रविवार का धार्मिक दिन याद रख कर उसे पवित्र रखना.....
पिता और माता का आदर करो.....
तुम जान से नहीं मारोगे.....
तुम व्यभिचार नहीं करोगे.....
तुम चोरी नहीं करोगे.....
तुम अपने पड़ोसी के विरूध्द झुठी गवाही नहीं दोगे.....
तुम अपने पड़ोसी के घर की लालसा नहीं करोगे.....

....13

जराथुष्ट्

अच्छाई और बुराई, स्वर्ग और नरक, देवदूत और शैतान, इन सब के विचार हमारे अन्दर ही बसे हैं। इस जगत् में पूर्ण न्ति थी जब तक कि देवदूत अहरिमन ने विद्रोह कर दिया और उसे स्वर्ग से निकाल दिया गया। इसलिए अच्छाई और बुराई की लड़ाई तब तक चलती रहेगी जब तक न्याय का अन्तिम दिवस आएगा। तब संसार फिर से नया हो जाएगा और बुराई चली जाएगी। शुध्द और पवित्र आत्मा को स्वर्ग के साम्राज्य का साक्षात्कार प्राप्त होगा।

"वह आत्मा जो बुराई लड़ने में डरती है, वह इस संसार में अपना दैविक कार्य नहीं कर पाई और इस संसार में आकर सारा जीवन व्यर्थ गँवा दिया।"

"पुनर्जीवन के दिन तुम्हें अहुरा माज़्दा को उत्तर देना होगा अपने विचारों, शब्दों और कर्मोका।"

आनन्द

अवेस्टा हमें बताती है कि हमारे जीवन का सबसे उत्तम लक्ष्य होना चाहिए कि हमें समपूर्ण आनन्द प्राप्त हो। ये हमें तब मिल सकता है जब हमें ईश्वर की इच्छा का ज्ञान हो और उस इच्छा का हम पालन करें।

"जीने का आनन्द इतना हमारे हृदय में भरने दें कि वो उफन कर गिरने लगे।"

शादी

सतीत्व जोरोआसर्टिनिज़्म {पारसियों का धर्म} में सबसे उत्तम धर्म और गुण है। विवाह एक अभंशनीय संविदा है और बच्चे एक आशीर्वाद। औरत ही विवाह और मानवता की शक्ति को बनाए रखती है।

"एक पवित्र नारी अहुरा माज़्दा की सबसे उत्तम सृष्टि है।

"नारी सृष्टि का एक चमत्कार है। वह सातों क्षेत्रों में अपने आकार और अपनी सुन्दरता में उत्तम हैं। वह जीवन के बाग में एक खिलता पुष्प है जिसकी महक चारों ओर फैलती है।"

"नारी आदमी को शिष्टाचार और कुलीनता सिखाती हैं। वह आदमी को नैतिकता की ऊँचाईतक बढ़ावा देती हैं। वह आदमी के जीवन की शक्ति जिन्दा रखती हैं।

लाओ जे

टाओ और पानी

टाओ और पानी एक समान हैं क्योंकि पानी को जिस पात्र में भी डाली वो वही रूप ले लेता हैं इसलिए वह सबसे लचीला, और सहज हैं। टाओ प्रकृति में स्त्रीत्व हैं और सबकी माँ मानी जाती हैं। इसलिए वह ही कुन्डलिनी हैं। घाटी की आत्मा कभी नहीं मरती। यह हैं रहस्यपूर्ण स्त्री। रहस्यपूर्ण स्त्री के द्वार को स्वर्ग और धरती की जड़ कहा जाता हैं। कम दिखाई पड़ती हैं पर उसका प्रयोग उसे कभी समाप्त नहीं करेगा।"

सारांश

लाओ जे की शिक्षाओं से हम ये सीखते हैं कि गुरु का लक्ष्य हैं कि वे दैविक उजाला फैलाएँ और एक ऐसा मार्ग बनें जो अन्वेषकों को जागृत करे और उन्हें उच्च स्तर पर ले जाएँ।

लाओ जे गुरु का स्वरूप थे जो दैविक शक्ति व्यक्त करते थे। यह उनकी शिक्षाओं से ही नहीं पर उनके जीवन में भी दिखता है। वह केवल एक चीज देख सकते थे अर्थात असीम और संपूर्ण रूप में टाओ और ईश्वर। कोई समझौता नहीं था। उनका ध्यान पवित्र था।

गुरु असीम करूणावश शिक्षा प्रदान करता हैं। लाओ जे किसी भी अन्वेषक से प्रेम कर सकते थे क्योंकि वह उनमे एक दैविक रूप देखते थे। वह उस रूप से प्रेम करते थे और उसीकी ओर

उनकी शिक्षा भी संकेत करती थी। गुरु पवित्रता की शिक्षा देता हैं। शुध्दता और पवित्रता हमें भ्रम और माया से परे ले जाकर दैविक रूप दिलाती है और वहाँ हमें आनन्द से मुक्ति, प्रेम में सन्तोष और आत्मा में समपूर्णता प्राप्त होती हैं।

जब कोई गुरु बनता हैं तो वो दैविकता के समुद्र में डूब जाता हैं। हमें शान्ति और सुख प्राप्त होता हैं, कुछ अन्य अर्थ नहीं रखता और यह विश्वास हो जाता है कि सब ठीक हो जाएगा क्योंकि हम पवित्रता बन जाते हैं।

"संसार का आरंभ था और यह आरंभ संसार की माँ हो सकती हैं।

जब आप माँ को जान गए तो अब उसके बालक को जानिए। जब बालक को जान जाएँ तो माँ के पास लौट जाओ और उन्हे कस कर पकड़ लो, और अपने अन्तिम दिनों तक तुम्हें कोई संकट या भय नहीं मिलेगा।"

हमारा वार्षिक शुल्क इस प्रकार हैं.....

अंग्रजी	200/-
हिन्दी	108/-
मराठी	108/-

आप अपना ड्राफ्ट विश्व निर्मला धर्म के नामसे भेजे।

हमारा पता
विश्व निर्मला धर्म
पोस्ट बॉक्स नं. 1901
कोथरूड, पुणे 29.